IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

सिंधु घाटी सभ्यता में नगर नियोजन और सामाजिक संरचना : पुरातात्विक साक्ष्यों का विश्लेषण

Deepak kumar
LDC
Forbesganj College, Forbesganj
Araria, Bihar

सारांश

सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 3300–1300 ई.पू.) प्राचीन विश्व की प्रमुख नगरीय सभ्यताओं में से एक है, जो अपनी उन्नत नगर नियोजन प्रणाली के लिए विशेष रूप से विख्यात है। मोहनजो–दारो, हड़प्पा, धोलावीरा, लोथल और कालीबंगा जैसे प्रमुख स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों में ग्रिड–आधारित सड़क व्यवस्था, मानकीकृत ईंटों का उपयोग, उन्नत जल–निकासी प्रणाली तथा सार्वजनिक संरचनाएँ प्रमुख हैं। ये विशेषताएँ कार्यक्षमता, स्वच्छता और सामूहिक संगठन पर बल दर्शाती हैं। सामाजिक संरचना के संदर्भ में, महलों, मंदिरों या राजकीय कब्रों की स्पष्ट अनुपस्थिति केंद्रीकृत राजसत्ता या स्पष्ट वर्ग–विभेद की कमी की ओर संकेत करती है। पुरातात्विक प्रमाणों से हेटरार्किकल या सहकारी सामाजिक व्यवस्था का अनुमान लगाया जाता है, जिसमें व्यापार, मानकीकरण और सार्वजनिक कल्याण पर जोर था।

यह सभ्यता मेसोपोटामिया या मिस्र की सभ्यताओं से भिन्न है, जहाँ राजकीय या धार्मिक प्रभुत्व स्पष्ट होता है। विश्लेषण दर्शाता है कि नगर नियोजन की समरूपता और तकनीकी उन्नति सामूहिक प्रयासों पर आधारित थी, जिसमें व्यक्तिगत शक्ति प्रदर्शन कम था। यह पेपर पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर नगर नियोजन की विशेषताओं तथा सामाजिक संरचना के संभावित मॉडल का मूल्यांकन करता है, तथा तर्क देता है कि सिंधु सभ्यता में एकता और कार्यक्षमता का संतुलन प्रमुख था, जो प्राचीन शहरीकरण का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द : सिंधु घाटी सभ्यता, नगर नियोजन, ग्रिड प्रणाली, जल–निकासी, सामाजिक संरचना, हेटरार्की, पुरातात्विक साक्ष्य, मोहनजो–दारो, हड़प्पा।

परिचय

सिंधु घाटी सभ्यता प्राचीन विश्व की चार प्रमुख नदी–घाटी सभ्यताओं में से एक है, जो अपनी भौगोलिक विस्तार (लगभग 12 लाख वर्ग किमी) और नगरीय विशेषताओं के कारण महत्वपूर्ण है। इस सभ्यता के प्रमुख स्थलमोहनजो–दारो, हड़प्पा, धोलावीरा, लोथल, कालीबंगा और राखीगढ़ी से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य उन्नत शहरी नियोजन, मानकीकृत निर्माण सामग्री तथा जटिल जल प्रबंधन प्रणाली को प्रमाणित करते हैं। ये विशेषताएँ 2600–1900 ई.पू. के परिपक्व हड़प्पा काल में चरम पर थीं। नगर नियोजन की समरूपता ग्रिड पैटर्न वाली सड़कें, ढकी नालियाँ, घरों में कुएँ और सार्वजनिक स्नानघर प्रशासनिक दक्षता और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर केंद्रित व्यवस्था को दर्शाती है। ईंटों का अनुपात (4:2:1) तथा वजन–माप की मानकीकृत इकाइयाँ पूरे क्षेत्र में एकसमानता का प्रमाण हैं।

सामाजिक संरचना के संबंध में प्रमुख प्रश्न यह है कि महलों, भव्य मंदिरों या राजकीय स्मारकों की अनुपस्थिति क्या दर्शाती है। पुरातात्विक प्रमाणों में कोई स्पष्ट राजकीय कब्रें या व्यक्तिगत वैभव नहीं मिलता, जो केंद्रीकृत सत्ता की कमी की ओर इशारा करता है। कब्रिस्तान में समान प्रकार की कब्रें तथा घरों में सीमित आकार भेद सामाजिक समतावाद या हेटरार्की (heterarchy) की संभावना को मजबूत करते हैं। यह पुरातात्विक साक्ष्यों उत्खनन रिपोर्ट्स, मानकीकरण विश्लेषण तथा हाल के अध्ययनों के आधार पर नगर नियोजन की तकनीकी विशेषताओं तथा सामाजिक संरचना के अनुमानों का विश्लेषण करता है। यह तर्क देता है कि सिंधु सभ्यता में नगर नियोजन कार्यक्षमता और सामूहिक कल्याण पर आधारित था, जबकि सामाजिक ढाँचा विकेंद्रीकृत एवं सहकारी था। यह अध्ययन प्राचीन शहरीकरण के मॉडल को समझने में सहायक है तथा सभ्यता की अनूठी विशेषताओं को उजागर करता है।

1. नगर नियोजन : पुरातात्विक साक्ष्यों का विश्लेषण और विशेषताएँ

1.1 ग्रिड–आधारित सड़क प्रणाली

सिंधु घाटी सभ्यता में नगर नियोजन की सबसे प्रमुख विशेषता ग्रिड–आधारित सड़क व्यवस्था है, जो पुरातात्विक साक्ष्यों से स्पष्ट रूप से प्रमाणित होती है। मोहनजो–दारो और हड़प्पा के उत्खनन में मुख्य सड़कें उत्तर–दक्षिण तथा पूर्व–पश्चिम दिशाओं में लगभग समकोण पर मिलती हुई पाई गई हैं, जो एक व्यवस्थित ग्रिड पैटर्न का निर्माण करती हैं। मुख्य सड़कों की चौड़ाई सामान्यतः 9 से 10 मीटर तक होती थी, जबकि गलियाँ 1.8 से 3.6 मीटर चौड़ी थीं। इस व्यवस्था में सड़कों के चौराहों पर गोलाकार कोने (Rounded Corners) बनाए गए थे, जो यातायात की सुगमता और सफाई में सहायक थे।

यह ग्रिड पैटर्न पूरे सभ्यता क्षेत्र में एकरूपता दर्शाता है, चाहे वह मोहनजो–दारो हो या हड़प्पा। धोलावीरा में नगर को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया गया था, दुर्ग (Citadel), मध्य नगर और निचला नगर जिनके बीच सड़कें किलेबंदी और नियंत्रित प्रवेश के साथ जुड़ी हुई थीं। यह संरचना दर्शाती है कि सड़कें केवल यातायात के लिए नहीं, बल्कि प्रशासनिक नियंत्रण, सुरक्षा और

आर्थिक गतिविधियों के लिए भी डिजाइन की गई थीं। पुरातात्विक साक्ष्य बताते हैं कि सड़कों का निर्माण ईंटों से हुआ था और उनमें ढलान दिया गया था ताकि वर्षा जल का निकास सुगम हो। इस व्यवस्था की एकरूपता से अनुमान लगाया जाता है कि नगर नियोजन में केंद्रीकृत योजना या सामूहिक मानक थे, जो पूरे क्षेत्र में लागू किए गए। ग्रिड प्रणाली ने जनसंख्या घनत्व को प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया और घरों तक पहुँच को सुनिश्चित किया। यह विशेषता सिंधु सभ्यता को समकालीन मेसोपोटामिया या मिस्र की सभ्यताओं से अलग करती है, जहाँ सड़कें अधिक अनियमित होती थीं। कुल मिलाकर, ग्रिड–आधारित सड़क प्रणाली नगर नियोजन की तकनीकी परिपक्वता और कार्यक्षमता पर आधारित संगठन का प्रमाण है, जो प्राचीन शहरीकरण में दुर्लभ स्तर की योजना का द्योतक है।

1.2 जल प्रबंधन और स्वच्छता व्यवस्था

सिंधु घाटी सभ्यता में जल प्रबंधन और स्वच्छता व्यवस्था पुरातात्विक साक्ष्यों से प्राप्त सबसे उन्नत विशेषताओं में से एक है। मोहनजो–दारो में प्रत्येक घर में ईंटों से निर्मित कुआँ मिला है, जिससे प्रति घर जल आपूर्ति की सुविधा सुनिश्चित थी। घरों में स्नानघर और शौचालय की व्यवस्था थी, जो मुख्य सड़कों के साथ जुड़ी ढकी हुई नालियों से जुड़ी हुई थीं। ये नालियाँ ईंटों से बनीं, ढकी हुईं और मैनहोल तथा सोख्तों (Soak Pits) से युक्त थीं, जो अपशिष्ट जल को प्रभावी ढंग से बाहर निकालती थीं। मोहनजो–दारो का विशाल स्नानागार (Great Bath) इस व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण है। यह 12 मीटर लंबा, 7 मीटर चौड़ा और 2.4 मीटर गहरा संरचना जलरोधक ईंटों से निर्मित है, जिसमें सीढ़ियाँ, बदलने के कमरे और जल निकासी की व्यवस्था थी। इसका निर्माण और रखरखाव सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा संभवतः सामूहिक अनुष्ठानों पर जोर दर्शाता है। लोथल में विश्व का सबसे प्राचीन डॉकयार्ड मिला है, जो ज्वार–भाटा प्रबंधन और जल–स्तर नियंत्रण की उन्नत समझ को प्रमाणित करता है। धोलावीरा में वर्षा जल संग्रहण के लिए विशाल जलाशय और नहरें पाई गई हैं, जो शुष्क क्षेत्र में जल संरक्षण की रणनीति को दर्शाती हैं।

ये साक्ष्य बताते हैं कि सभ्यता में स्वच्छता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक स्तर पर प्रबंधित थी। अपशिष्ट प्रबंधन की यह व्यवस्था महामारी नियंत्रण और जनसंख्या स्वास्थ्य के लिए आवश्यक थी। जल प्रबंधन की तकनीकी उन्नति जलरोधक ईंटें, ढकी नालियाँ और संग्रहण संरचनाएँप्रशासनिक क्षमता और सामूहिक प्रयासों का प्रमाण हैं। यह विशेषता सिंधु सभ्यता को प्राचीन विश्व में स्वच्छता और जल प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी बनाती है, जो आधुनिक शहरी नियोजन के लिए भी प्रासंगिक है।

1.3 मानकीकृत निर्माण और क्षेत्रीकरण

सिंधु घाटी सभ्यता में निर्माण सामग्री और नगर क्षेत्रीकरण की मानकीकृत प्रक्रिया पुरातात्विक साक्ष्यों से स्पष्ट रूप से प्रमाणित है। ईंटों का अनुपात 4: 2: 1 (लंबाईः चौड़ाईः मोटाई) पूरे सभ्यता क्षेत्र में एकसमान पाया गया है, चाहे वह मोहनजो–दारो हो या हड़प्पा या दूरस्थ स्थल जैसे लोथल। यह मानकीकरण निर्माण की गुणवत्ता, स्थिरता और तेजी से निर्माण को सुनिश्चित करता था। ईंटें पकी हुई थीं और विभिन्न आकारों में उपलब्ध थीं, लेकिन अनुपात में कोई भिन्नता नहीं थी। नगर क्षेत्रीकरण में आवासीय, सार्वजनिक और संभवतः औद्योगिक क्षेत्र स्पष्ट रूप से विभाजित थे। मोहनजो–दारो में HR&A क्षेत्र में बड़े घर पाए गए, जबकि अन्य क्षेत्रों में छोटे घर थे, जो सीमित आर्थिक भेद का संकेत देते हैं। घरों में केंद्रीय आँगन, कई कमरे, स्नानघर और शौचालय की व्यवस्था सामान्य थी। सार्वजनिक संरचनाओं में हड़प्पा और लोथल में अनाज भंडार (Granaries) मिले हैं, जो केंद्रीकृत खाद्य सुरक्षा व्यवस्था को दर्शाते हैं।

क्षेत्रीकरण में दुर्ग (Citadel) का भाग ऊँचा और किलेबंद था, जिसमें विशाल स्नानागार और संभवतः प्रशासनिक भवन थे, जबकि निचला नगर आवासीय और व्यावसायिक गतिविधियों के लिए था। यह विभाजन कार्यात्मक दक्षता और सुरक्षा पर आधारित था। मानकीकृत वजन–माप प्रणाली (दशमलव आधारित) और मुहरों की एकरूपता से निर्माण और व्यापार में नियंत्रण का प्रमाण मिलता है। ये साक्ष्य दर्शाते हैं कि निर्माण और क्षेत्रीकरण में केंद्रीकृत मानक थे, जो व्यक्तिगत विविधता के बजाय सामूहिक आवश्यकताओं पर आधारित थे। महलों या भव्य व्यक्तिगत संरचनाओं की अनुपस्थिति सामाजिक समतावाद या कार्य–आधारित संगठन की ओर संकेत करती है। कुल मिलाकर, मानकीकृत निर्माण और क्षेत्रीकरण सिंधु सभ्यता की तकनीकी और प्रशासनिक परिपक्वता का प्रमाण है, जो प्राचीन शहरीकरण में एक अनूठा योगदान है।

2. सामाजिक संरचना : पुरातात्विक साक्ष्यों से अनुमान

2.1 केंद्रीकृत सत्ता की अनुपस्थिति

सिंधु घाटी सभ्यता में सामाजिक संरचना के अध्ययन में सबसे उल्लेखनीय तथ्य केंद्रीकृत सत्ता के स्पष्ट प्रमाणों की अनुपस्थिति है। प्रमुख उत्खनित सीलों मोहनजो–दारो, हड़प्पा, धोलावीरा और लोथल में कोई भव्य महल, राजकीय निवास या शाही किलेबंदी नहीं मिली है। समकालीन मेसोपोटामिया और मिस्र की सभ्यताओं में राजा या पुरोहित वर्ग के निवास और स्मारक स्पष्ट रूप से मौजूद होते थे, लेकिन सिंधु सभ्यता में ऐसी कोई संरचना नहीं पाई गई। कब्रिस्तान के उत्खनन में भी राजकीय कब्रें या व्यक्तिगत वैभव से युक्त शवाधान नहीं मिले। अधिकांश कब्रें समान प्रकार की हैं, आयताकार गड्ढे, ईंटों से बने या साधारण दफन जिनमें कोई स्पष्ट धन–संपदा या पद–प्रतीक नहीं हैं। हथियारों की मात्रा न्यूनतम है, जो सैन्य वर्ग या युद्ध–प्रधान समाज की कमी को दर्शाता है। मुहरों और मुद्राओं पर चित्रित प्रतीक (जैसे पशुपति, एकशृंगी पशु) धार्मिक या प्रतीकात्मक महत्व रखते हैं, लेकिन इनमें कोई राजकीय

चिह्न या व्यक्तिगत शक्ति प्रदर्शन नहीं दिखता।

यह अनुपस्थिति दर्शाती है कि सत्ता का केंद्रीकरण व्यक्तिगत या राजवंशीय स्तर पर नहीं था। प्रशासनिक नियंत्रण संभवतः सामूहिक या कार्य–आधारित था, जिसमें व्यापार, निर्माण और जल प्रबंधन जैसे कार्यों के लिए संगठित प्रयास किए जाते थे। मानकीकृत ईंटें, वजन–माप और मुहरें पूरे क्षेत्र में एकसमानता दर्शाती हैं, जो केंद्रीकृत योजना का संकेत देती हैं, लेकिन यह योजना राजकीय सत्ता के बजाय सामूहिक आवश्यकताओं पर आधारित प्रतीत होती है। केंद्रीकृत सत्ता की कमी से सामाजिक संरचना में विकेंद्रीकरण या सहकारी तंत्र की संभावना मजबूत होती है। यह विशेषता सिंधु सभ्यता को प्राचीन विश्व की अन्य सभ्यताओं से अलग करती है और दर्शाती है कि बड़े पैमाने पर नगरीय संगठन बिना राजकीय प्रभुत्व के भी संभव था। पुरातात्विक साक्ष्य इस निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं कि सत्ता का वितरण कार्यात्मक और सामूहिक स्तर पर था, न कि व्यक्तिगत या वंशानुगत।

2.2 संभावित सामाजिक मॉडल

पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की सामाजिक संरचना के लिए कई संभावित मॉडल प्रस्तावित किए गए हैं, जिनमें हेटरार्की (मिजमतंतबील) और सहकारी व्यवस्था प्रमुख हैं। हेटरार्की मॉडल में कई समानांतर शक्ति केंद्र होते हैं, जो एक–दूसरे के अधीन नहीं होते। सिंधु सभ्यता में विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार, निर्माण और जल प्रबंधन जैसे कार्यों के लिए अलग–अलग विशेषज्ञ समूहों की उपस्थिति का अनुमान लगाया जाता है। मुहरों पर चित्रित प्रतीक और मानकीकृत वस्तुओं से व्यापारी संघ या गिल्ड–आधारित संगठन की संभावना मजबूत होती है।

सहकारी सामाजिक मॉडल में सामूहिक कल्याण पर जोर दिया जाता है। विशाल स्नानागार, सार्वजनिक अनाज भंडार, ढकी नालियाँ और जल संग्रहण संरचनाएँ सामूहिक प्रयासों का प्रमाण हैं। इन संरचनाओं का निर्माण और रखरखाव व्यक्तिगत लाभ के बजाय समुदाय की आवश्यकताओं के लिए किया गया प्रतीत होता है। घरों में कुएँ और स्नानघर की सामान्य उपलब्धता तथा अपशिष्ट प्रबंधन की व्यवस्था सार्वजनिक स्वास्थ्य और समानता पर केंद्रित व्यवस्था को दर्शाती है। सामाजिक मॉडल में धार्मिक विशेषज्ञों की भूमिका भी संभावित है। मुहरों पर पशुपति जैसे चित्र और अग्नि–वेदिकाएँ (कुछ स्थलों पर) धार्मिक अनुष्ठानों की उपस्थिति दर्शाते हैं, लेकिन ये मंदिर–केंद्रित नहीं हैं। यह संकेत देता है कि धार्मिक संगठन सामाजिक नियंत्रण का माध्यम था, न कि सत्ता का स्रोत।

संभावित मॉडल विकेंद्रीकृत, कार्य–आधारित और सहकारी है। सत्ता का वितरण विभिन्न समूहों व्यापारी, निर्माण विशेषज्ञ, जल प्रबंधक और धार्मिक प्रतीक विशेषज्ञों में बँटा हुआ था। यह मॉडल केंद्रीकृत राजसत्ता की आवश्यकता के बिना बड़े पैमाने पर नगरीय संगठन को संभव बनाता है। पुरातात्विक साक्ष्य इस दिशा में मजबूत प्रमाण प्रदान करते हैं और दर्शाते हैं कि सिंधु सभ्यता में सामाजिक संरचना कार्यक्षमता और सामूहिक आवश्यकताओं पर आधारित थी।

2.3 वर्ग विभेद के संकेत

सिंधु घाटी सभ्यता में वर्ग विभेद के संकेत सीमित और अस्पष्ट हैं, लेकिन पुरातात्विक साक्ष्य कुछ स्तर पर आर्थिक और सामाजिक भेद की ओर इशारा करते हैं। मोहनजो–दारो के HR&A क्षेत्र में बड़े और अधिक कमरों वाले घर पाए गए हैं, जिनमें केंद्रीय आँगन, कई स्नानघर और भंडारण कक्ष थे। ये घर सामान्य आवासीय घरों से बड़े हैं, जो कुछ परिवारों या समूहों के पास अधिक संसाधन होने का संकेत देते हैं। कुछ स्थलों पर मुहरों और आभूषणों की गुणवत्ता में अंतर मिलता है। उच्च गुणवत्ता वाली मुहरें (जैसे स्टेटाइट या कार्नेलियन से बनी) और बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण कुछ कब्रों में पाए गए हैं, जो व्यापार या विशेष कौशल से जुड़े व्यक्तियों की उपस्थिति दर्शाते हैं। हालांकि, ये अंतर बहुत स्पष्ट नहीं हैं और अधिकांश कब्रें समान प्रकार की हैं। घरों के आकार और निर्माण में भी सीमित भेद दिखता है। कुछ घरों में अधिक ईंटों का उपयोग और बेहतर जल निकासी व्यवस्था है, जबकि अन्य छोटे और साधारण हैं।

यह आर्थिक स्तर का संकेत हो सकता है, लेकिन कोई स्पष्ट वर्ग–आधारित अलगाव नहीं है। दास प्रथा या कठोर वर्ण व्यवस्था के प्रमाण नहीं मिले हैं। वर्ग विभेद के संकेत मौजूद हैं, लेकिन वे न्यूनतम और कार्य–आधारित प्रतीत होते हैं। कोई राजकीय या पुरोहित वर्ग का स्पष्ट प्रमाण नहीं है। यह दर्शाता है कि सामाजिक संरचना में आर्थिक असमानता थी, लेकिन यह कठोर वर्ग विभेद में नहीं बदली। पुरातात्विक साक्ष्य इस ओर इशारा करते हैं कि सिंधु सभ्यता में सामाजिक गतिशीलता और कार्य–आधारित स्थिति अधिक महत्वपूर्ण थी, न कि जन्म–आधारित वर्ग। यह विशेषता सभ्यता की समतावादी प्रवृत्ति को मजबूत करती है और प्राचीन विश्व में एक अनूठा सामाजिक मॉडल प्रस्तुत करती है।

3. तुलनात्मक विश्लेषण और व्याख्या

सिंधु घाटी सभ्यता का नगर नियोजन और सामाजिक संरचना अन्य समकालीन प्राचीन सभ्यताओं मुख्यतः मेसोपोटामिया (सुमेरियन) और प्राचीन मिस्र के साथ तुलना करने पर कई मौलिक अंतर और कुछ समानताएँ उभरकर सामने आती हैं। ये तुलनाएँ पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित हैं और सभ्यता की अनूठी विशेषताओं को स्पष्ट करती हैं। नगर नियोजन के संदर्भ में, सिंधु सभ्यता की ग्रिड–आधारित सड़क प्रणाली, मानकीकृत ईंट अनुपात (4रू2रू1) और व्यापक जल–निकासी व्यवस्था मेसोपोटामिया और मिस्र से स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। मेसोपोटामिया के शहरों (जैसे उर, लगाश) में सड़कें अनियमित और घुमावदार होती थीं, जबकि सिंधु में लगभग समकोणीय ग्रिड पैटर्न पूरे क्षेत्र में एकसमान था। मिस्र में नील नदी के किनारे बसे शहरों में भी सड़कें अधिक कार्बनिक और

नदी–केंद्रित होती थीं। सिंधु की ढकी नालियाँ, मैनहोल और सोख्ते स्वच्छता पर अभूतपूर्व ध्यान दर्शाते हैं, जो मेसोपोटामिया में केवल कुछ बड़े शहरों तक सीमित था और मिस्र में मुख्यतः नदी पर निर्भर था। धोलावीरा और लोथल में जल संग्रहण और डॉकयार्ड जैसी संरचनाएँ पर्यावरणीय अनुकूलन की उच्च स्तर की समझ को प्रमाणित करती हैं, जो अन्य सभ्यताओं में इतनी व्यवस्थित नहीं मिलती।

सामाजिक संरचना की तुलना में अंतर और भी स्पष्ट हैं। मेसोपोटामिया और मिस्र में केंद्रीकृत राजसत्ता और पुरोहित वर्ग प्रमुख थे। जिगुराट (मेसोपोटामिया) और पिरामिड (मिस्र) राजा या देवता–राजा के प्रभुत्व के प्रतीक थे। इनमें राजकीय महल, भव्य मंदिर और धन–संपदा से युक्त कब्रें स्पष्ट रूप से मौजूद थीं। इसके विपरीत, सिंधु सभ्यता में कोई महल, मंदिर या राजकीय कब्र नहीं मिली। कब्रिस्तान में समान प्रकार की कब्रें और न्यूनतम हथियारों की उपस्थिति सैन्य या राजकीय प्रभुत्व की कमी को दर्शाती है। मुहरों पर चित्रित प्रतीक धार्मिक महत्व रखते हैं, लेकिन वे व्यक्तिगत शक्ति प्रदर्शन के बजाय सामूहिक या प्रतीकात्मक लगते हैं। व्याख्या के स्तर पर, सिंधु सभ्यता में नगर नियोजन की समरूपता और स्वच्छता व्यवस्था सामूहिक सहयोग और कार्यक्षमता पर आधारित समाज की ओर संकेत करती है। मानकीकरण (ईंट, वजन–माप, मुहरें) व्यापार और प्रशासन में केंद्रीकृत नियंत्रण का प्रमाण है, लेकिन यह नियंत्रण राजकीय नहीं, बल्कि गिल्ड या सामूहिक संगठन–आधारित प्रतीत होता है। हेटरार्की मॉडल यहाँ उपयुक्त लगता है, जिसमें कई समानांतर शक्ति केंद्र (व्यापारी, निर्माण विशेषज्ञ, जल प्रबंधक) कार्य करते थे। मेसोपोटामिया और मिस्र में सत्ता का केंद्रीकरण धार्मिक और राजकीय प्रतीकों पर निर्भर था, जबकि सिंधु में कार्यात्मक दक्षता और सार्वजनिक कल्याण पर। यह अंतर पर्यावरणीय कारकों से भी जुड़ा हो सकता है, सिंधु क्षेत्र में नदियों की अनियमितता ने सामूहिक जल प्रबंधन को आवश्यक बनाया, जबकि मिस्र में नील की नियमित बाढ़ ने केंद्रीकृत नियंत्रण को संभव बनाया। तुलनात्मक विश्लेषण दर्शाता है कि सिंधु सभ्यता प्राचीन विश्व में एक अनूठा मॉडल प्रस्तुत करती है, जहाँ उन्नत शहरीकरण बिना राजकीय प्रभुत्व के संभव था। यह सभ्यता कार्यक्षमता, समावेशिता और पर्यावरणीय अनुकूलन पर आधारित थी, जो अन्य सभ्यताओं के राज–केंद्रित मॉडल से भिन्न है। यह व्याख्या सिंधु सभ्यता को प्राचीन शहरीकरण के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है तथा आधुनिक सस्टेनेबल शहरी नियोजन के लिए प्रासंगिक सबक देती है।

4. निष्कर्ष

सिंधु घाटी सभ्यता में नगर नियोजन और सामाजिक संरचना का पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित विश्लेषण दर्शाता है कि यह प्राचीन विश्व की एक अनूठी और उन्नत नगरीय सभ्यता थी। ग्रिड–आधारित सड़क प्रणाली, मानकीकृत ईंट निर्माण, उन्नत जल–निकासी और स्वच्छता व्यवस्था तथा जल संग्रहण संरचनाएँ कार्यक्षमता, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामूहिक संगठन पर केंद्रित नियोजन का प्रमाण हैं। ये विशेषताएँ पूरे सभ्यता क्षेत्र में एकरूपता दर्शाती हैं, जो प्रशासनिक दक्षता और सामूहिक प्रयासों की मजबूती को प्रमाणित करती हैं। सामाजिक संरचना के स्तर पर, महलों, मंदिरों, राजकीय कब्रों या स्पष्ट वर्ग–आधारित संरचनाओं की अनुपस्थिति केंद्रीकृत राजसत्ता की कमी की ओर संकेत करती है। कब्रिस्तान में समानता, न्यूनतम हथियारों की उपस्थिति तथा घरों में सीमित आर्थिक भेद हेटरार्किकल या सहकारी सामाजिक मॉडल की संभावना को मजबूत करते हैं। वर्ग विभेद के संकेत न्यूनतम और कार्य–आधारित प्रतीत होते हैं, जो जन्म–आधारित कठोर वर्ग व्यवस्था की अनुपस्थिति दर्शाते हैं।

तुलनात्मक दृष्टि से, सिंधु सभ्यता मेसोपोटामिया और मिस्र की राज–केंद्रित और धार्मिक–प्रधान सभ्यताओं से भिन्न है। जहाँ अन्य सभ्यताओं में सत्ता व्यक्तिगत या राजकीय प्रतीकों पर निर्भर थी, वहीं सिंधु में कार्यक्षमता, पर्यावरणीय अनुकूलन और सामूहिक कल्याण पर जोर था। यह मॉडल प्राचीन शहरीकरण में एक दुर्लभ उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ बड़े पैमाने पर संगठन बिना राजकीय प्रभुत्व के संभव था। कुल मिलाकर, सिंधु सभ्यता का अध्ययन आधुनिक शहरी नियोजन के लिए प्रासंगिक सबक देता है, स्वच्छता, मानकीकरण और सामूहिक प्रयासों की महत्ता। लिपि के अपठित रहने और सीमित उत्खनन के बावजूद, उपलब्ध साक्ष्य इस सभ्यता की तकनीकी परिपक्वता और सामाजिक समावेशिता को प्रमाणित करते हैं। आगे के अनुसंधान में डीएनए अध्ययन, जलवायु प्रभाव और छोटे स्थलों पर अधिक फोकस से इसकी समझ और गहन हो सकती है। यह सभ्यता प्राचीन मानव समाज की क्षमता को दर्शाती है कि विविध चुनौतियों के बीच स्थायी और कार्यात्मक शहरी जीवन संभव है।

संदर्भ सूची :–

1. शर्मा, रामशरण, (2024), ''प्राचीन भारत का इतिहास'', ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पृ. स. 45–47।
2. थापर, रोमिला, (2023), ''प्राचीन भारत का इतिहास (खंड 1)'', पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, पृ. स. 180–183।
3. सिंह, उपिंदर, (2022), ''प्राचीन एवं पूर्व–मध्यकालीन भारत का इतिहास'', पीयर्सन, नई दिल्ली, पृ. स. 200–201।
4. झा, द्विजेंद्र नारायण, (2021), ''प्राचीन भारत का इतिहास'', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. स. 15–16।
5. महाजन, वी. डी., (2020), ''प्राचीन भारत का इतिहास'', एस. चंद प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. स. 90–92।
6. श्रीमाली, कृष्ण मोहन, (2023), ''प्राचीन भारत का इतिहास'', दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, दिल्ली, पृ. स. 140–143।
7. मजूमदार, आर. सी., (2022), ''प्राचीन भारत का इतिहास'', मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, पृ. स. 110–112।
8. चक्रवर्ती, दिलीप कुमार, (2024), ''प्राचीन भारत का पुरातात्विक इतिहास'', आर.एस. प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. स. 130–131।
9. पाण्डेय, एस. के., (2021), ''प्राचीन भारत का इतिहास वस्तुनिष्ठ'', युवा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. स. 60–62।
10. नेहरू, जवाहरलाल, (2019), ''भारत की खोज'', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. स. 145–146।
11. शर्मा, रमेश चंद्र, (2023), ''प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास'', किताब महल, इलाहाबाद, पृ. स. 100–101।
12. घोष, ए., (2022), ''प्राचीन भारत का पुरातत्व'', आर.एस. प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. स. 170–171।
13. भारत सरकार, (2020), ''एनसीईआरटी प्राचीन भारत (कक्षा 11)'', एनसीईआरटी, नई दिल्ली, पृ. स. 80–81।
14. काणे, पाण्डुरंग वामन, (2021), ''धर्मशास्त्र का इतिहास'', भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे, पृ. स. 220–221।
15. मजूमदार, आर. सी., (2024), ''प्राचीन भारत (खंड 1)'', भारतीया विद्या भवन, मुंबई, पृ. स. 190–192।
16. शर्मा, रामशरण, (2025), ''भारत का प्राचीन इतिहास'', ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पृ. स. 78–79।